।।श्री राम।।

नवीन दीक्षित साधकों के लिये

नाम दीक्षा के अवसर पर

बधाई हो। आज आप एक महान संत से दीक्षित हुए हैं। परम सौभाग्य से आज आपके अन्दर 'राम' नाम का बीज स्थापित हुआ है। आज के बाद सतत् जप व ध्यान की खाद व पानी जीवन भर देते रहेंगे तो यह मंत्र आपके जीवन को महानता से भर देगा। आपको अद्‌भुत सुख व शान्ति प्रदान करेगा। अगर भावपूर्ण जप व सिमरन जारी रहा तो आपको ऐसा लगेगा, मानो किसी ने आपके जीवन के दुःख-दर्द बांट लिए हों। अगर आप व्यस्त हैं तो ऐसी व्यस्तता भी किस काम की जिस में आधा घण्टा राम नाम का सिमरन न हो और मृत्यु के बाद के सारे जन्म ही बिगड़ जाएं। अधिक व्यवस्तता के बावजूद भी आप जप, ध्यान व अमृतवाणी का पाठ अवश्य करें।

सत्संग की विशेषताएं

* **सत्संग** में अमृतवाणी संकीर्तन, अन्य ग्रन्थों के पाठ, जप व प्रवचन होते हैं।

समयबद्धता :–

* सत्संग नियत समय पर प्रारम्भ होकर नियत समय पर समाप्त होता है।

अनुशासन :–

* यहां सभी साधक पंक्तिबद्ध व शान्त-भाव से बैठते हैं। जूते, चप्पल

भी पंक्ति में रखे जाते हैं। पूर्ण अनुशासन व निःस्वार्थ सेवा की भावना से सभी कार्य सम्पन्न किये जाते हैं।

आडम्बर-विहीनता :–

* सत्संग में कोई आडम्बर(दिखावा) नहीं है।
* कोई भेंट या चढ़ावा नहीं लिया जाता है।
* प्रसाद-वितरण व पुष्प-सज्जा नहीं की जाती है।
* पैर छूना-छुआना वर्जित है।
* कोई मत या सम्प्रदाय नहीं है।

हमारे गुरुजनों की विशेषताएं

हमारे उदार गुरुजनों ने जीवन भर अपनी आध्यात्मिक कमाई बांटी ही बांटी। जीवन भर दिया ही दिया, कभी कुछ नहीं लिया। हमारी पीड़ायें शान्त हों और कठिनाईयां दूर हों इस हेतु रातों को नहीं के बराबर सोते हैं। हम सुखी रहें इसी में इन को सन्तोष मिलता है। हमारा परलोक सुधरना चाहिये। इस हेतु मार्गदर्शन से लेकर शक्तिपात तक करते हैं। ऐसे संतों के चरणों में पहुंच कर हमने जो नाम दीक्षा ली है उसकी अगर परवाह नहीं की, माला व अमृतवाणी को ऐसे ही इधर उधर डाल दिया तो जीवन की ऐसी भूल होगी जिसका प्रायश्चित भी क्या हो ? हमारे तीनों गुरुजन अखण्ड ब्रह्मचारी हैं, इन्होंने सांसारिक भोग–विलास से अपने को सर्वथा अलग रखा एवं चरित्र निर्माण, सेवा व सिमरन इनके जीवन से परिलक्षित होता रहता है।

अमृतवाणी-सत्संग के प्रवर्तक

श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

जन्म-चैत्र पूर्णिमा सम्वत् 1925 (7 अप्रैल 1868)

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज १६वीं सदी के एक शान्त, दान्त, सिद्ध, उच्च कोटि के महान सन्त थे। एक सच्चे अनुभवी, पहुंचे हुए पूरे सत्गुरु एवं महान योगी थे।

पूज्यपाद एक विलक्षण एवं अद्वितीय प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी थे, **जिनका सानिध्य व सम्पर्क प्राप्त कर हम धन्य हुए हैं और परम सौभाग्यशाली बने हैं।**

श्री स्वामी जी द्वारा प्रदत्त नाम दीक्षा एक रहस्यवाद है, जिसमें स्वामी जी अपनी संकल्प-शक्ति से साधक के अन्तःकरण में **'रामनाम'** एक जाग्रत चैतन्य मंत्र को स्थापित करते हैं। जिस प्रकार बीजारोपण एक विशेष प्रकार से तैयार की हुई भूमि में किया जाता है और उस के उपरान्त जब देखभाल की जाती है तभी वह अंकुरित होता है और कालान्तर में वृक्ष बनता है। इसी प्रकार श्री स्वामी जी के अनुसार गुरु मार्ग दिखाने वाला होता है, उसका कार्य बीज बोना है। साधक का कर्त्तव्य है, सुदृढ़ निश्चय के साथ सतत् साधनारत् रहना, किन्तु जिस प्रकार अच्छा बीज उल्टा-सीधा कैसा भी भूमि में डाल दिया जाये अवश्यमेव अंकुरित होता है। उसी प्रकार सिद्ध जाग्रत संतों से मिला नाम(मंत्र) अवश्य ही अपना रंग दिखाता है। साधक के आचार-विचार व व्यवहार के परिवर्तन से इसकी अनुभूति की जा सकती है।

श्री स्वामी जी 13 नवम्बर 1960 को भौतिक चोला छोड़ परम धाम सिधार गये।

श्री स्वामी सत्यानन्द जी के परम सेवक, परम भक्त एवं एक दिव्य मूर्ति

श्री प्रेम जी महाराज

(जन्म - २ अक्तूबर सन् १६२०)

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी परम भक्त एवं विनम्र सेवक पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज बने। आप मन, वचन, कर्म से गुरुदेव की प्रतिमूर्ति थे। आपने स्वामी जी की विचारधारा को ज्यों का त्यों विशुद्ध बनाये रखा। सर्वथा श्री स्वामी जी महाराज को ही आगे रखा, अपने को सदैव पीछे ही रखकर सेवक भाव बनाये रखा। आप आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

नौकरी करते हुए श्री स्वामी जी के मिशन को आगे बढ़ाते रहे तथा जनकल्याणार्थ तन-मन-धन से सेवा करते रहे। आप आध्यात्मिक-शक्ति से सम्पन्न थे, इसलिये आपके द्वारा की गयी प्रार्थना सार्थक होती थी।

आप अपने आवागमन एवं भोजन का पूरा व्यय स्वयं वहन किया करते थे, किसी से कोई भेंट स्वीकार नहीं करते थे।

आपकी कथनी-करनी एक थी, चुप रह कर व कम बोल कर, साधकों को अपने जीवन एवं कार्यशैली से समझा देते थे। आप संकल्प-शक्ति के धनी थे। हज़ारों साधकों ने आपकी कृपा का अनुभव प्राप्त किया है। आपका मुखमण्डल इतना तेजस्वी था कि कोई भी आपसे दृष्टि नहीं मिला पाता था।

आप २६ जुलाई १६६३ को परम धाम सिधार गये।

परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी

श्रद्धेय डा. श्री विश्वामित्र जी महाराज

(जन्म—१५ मार्च सन् १९४०)

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के अन्तरंग शिष्य डॉ. श्री विश्वामित्र जी महाराज ने ऑल इंडिया इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईंसिज़, नई दिल्ली में २२ वर्षों तक गौरवशाली सेवा की। आप एशिया के अकेले ''**ऑक्यूलर माइक्रोबायोलोजिस्ट**'' के रुप में विख्यात हुये, प्रभु-प्रेम का आकर्षण आपको संसार से बांध नहीं पाया।

आपकी वाणी में विलक्षण तेज, ओज एवं सत्य का प्रभाव है। आपके प्रवचन एवं भजन कीर्तन-गायन से सभी श्रोतागण मुग्ध हो जाते है। आपके तप का प्रभाव आपके **तेजोमय मुख-मण्डल** से स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है।

आप अपने आवागमन एवं भोजन का पूरा व्यय स्वयं वहन किया करते हैं, **तथा किसी से कोई भेंट स्वीकार नहीं करते।**

आप राम-नाम को जीवन का एक मात्र उद्देश्य बनाते हुये, पूज्य श्री स्वामी जी महाराज द्वारा स्थापित आदर्श परम्पराओं का दृढ़तापूर्वक निर्वहन करते हुए अपने तेजोमयी प्रभा-मण्डल से समूचे भारत एवं विश्व को प्रकाशित कर रहे हैं। **आप दर्शन मात्र से ही सबको आनन्दित एवं प्रफुल्लित कर देते हैं।**

ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी हैं आप।

प्रारम्भिक छः मास का काल

श्री महाराज के कथनानुसार नवीन साधकों के लिये प्रथम छः मास का काल गुरु-कृपा का समय होता है। इसी काल में गुरु-कृपा से "राम-कृपा" का अवतरण साधक पर होता है। इस कृपा को साधन के द्वारा और बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिये।

उस समय साधक को कृपा-स्वरूप जो भी उपलब्धियां तथा अनुभूतियां होती हैं, वह आध्यात्मिक लाभ है। अतः साधक उस समय अपने-आपको सम्भाल कर रखे, सिकोड़ कर रखे, व सम्पर्क बनाये रखे।

सम्भाल कर रखे – साधक धैर्य रखे, डांवांडोल व भ्रमित न हो। अपनी अनुभूतियों की गुरु के अलावा अन्यत्र चर्चा न करे।

सिकोड़ कर रखे – वह प्रदर्शन न करे। अपनी साधना का जहां-तहां बखान न करे व डींग न मारे।

सम्पर्क बनाये रखे – अपने मार्गदर्शक से समय-समय पर मिलता रहे। पत्र द्वारा भी सम्पर्क रखकर मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

इस प्रकार उपरोक्त सावधानी न रखने से साधक मिलने वाले लाभ से वंचित रह सकता है। उसे जो उपलब्धि हुई है, वह भी कम हो सकती है।

भोजन करने में कम समय लगता है लेकिन पचाने में अधिक समय लगता है। किन्तु वमन (उल्टी) करने में कुछ ही क्षण लगते हैं।

इसी प्रकार दीक्षा लेने में कम समय लगता है। पचाने की क्रिया की भांति उसे हृदयंगम करने में अधिक समय लगता है। कृपा का प्रदर्शन करके, चर्चा करके, वमन (उल्टी) करने की भांति कम समय में ही साधक अपनी प्राप्त शक्ति को गंवा देता है।

साधना सत्संग

नवीन साधक को दीक्षा लेने के पश्चात् कम से कम एक बार तो साधना-सत्संग में अवश्य सम्मिलित होना चाहिये।

श्री स्वामी जी महाराज ने दीक्षित साधकों की उन्नति हेतु उन्हें सिधाने के लिये "साधना-सत्संग" शिविर लगाने आरम्भ किये, जो साधकों के लिये उनकी अनुपम देन हैं।

ये सत्संग पांच-रात्रि या तीन-रात्रि के लगाये जाते हैं, जहां साधक कुछ समय के लिये सांसारिक बंधनों से हटकर व परिवार से दूर जाकर क्रियात्मक (Practical) साधना करते हैं। इससे उनकी उन्नति के मार्ग की बाधायें दूर होती हैं। यह एक पाठशाला के समान है। जहां वे अनुशासन व नियमों का पालन करना सीखते हैं, साथ ही भजन करने का स्वभाव बनाते हैं। **"युक्ताहार विहारस्य, युक्त चेष्टस्य कर्मषु"** के अनुसार जीवन बनाते हैं।

ये पांच/तीन-रात्रि साधना-सत्संग बड़े ही महत्वपूर्ण होते हैं। लगातार पांच दिन गुरु के निकट सम्पर्क में रहने से शेष ३६० दिन के लिये सार्थक जीवन जीने की कला सीखने को मिलती है, जो हमारे व्यवहारिक जीवन के निर्माण में सहायक होती है।

यहां से ही हम स्वच्छता, नियमितता, शिष्टाचार, सेवा, संयम, विनम्रता आदि मानवीय गुण सीखते हैं अर्थात् हम सच्चे मानव बनने

की ओर अग्रसर होते हैं। हमारी दिनचर्या साधना-सत्संग के अनुसार होनी चाहिये। साधना सत्संग भारत के कई प्रान्तों में आयोजित होते हैं। मुख्यतः हरिद्वार "श्री रामशरणम्" में वर्ष में ५-६ साधना सत्संग आयोजित होते हैं।

साधना सत्संग सौभाग्य की जगह है। अद्‌भुत अनुभव की जगह है। कुछ साधक इतने भाव से भर कर आते हैं कि कई दिनों तक नशा सा छाया रहता है। परन्तु कुछ ऐसे भी हैं जो जैसे जाते हैं वैसे ही लौट आते हैं। क्योंकि समर्पण का भाव नहीं आता, जप नहीं करते, नियमों में नहीं रहते।

ध्यान

ध्यान एक वैज्ञानिक सूक्ष्म क्रिया है। ध्यान से विवेक जाग्रत होता है, मन एकाग्र होता है व बुद्धि निर्मल होती है। साधक आत्मिक-प्रसन्नता व शान्ति का उत्तरोत्तर लाभ प्राप्त करता है। ध्यान द्वारा ही आत्मा-परमात्मा का मिलन होता है।

अतः नवीन साधक को नित्य प्रातः व सायं काल नियत समय पर ध्यान में अवश्य बैठना चाहिये। प्रारम्भ में वह १५ मिनट तक बैठे। धीरे-धीरे यह समय ३० मिनट तक बढ़ा लेना चाहिये। दीक्षा के समय जो ध्यान की विधि बताई जाती है या जिस विधि से ध्यान कराया जाता है, उसी विधि से ध्यान करना चाहिये। ध्यान करने के पूर्व श्री अधिष्ठान जी के सम्मुख बैठकर, परमेश्वर का आह्वान करने हेतु नमस्कार-सप्तक बोलकर ध्यान में बैठना चाहिये एवं समाप्ति पर भी परमेश्वर को नमस्कार करके उठना चाहिये।

जाप

श्री स्वामी जी महाराज के अनुसार प्रत्येक साधक को प्रतिदिन दस हज़ार से कुछ अधिक राम-नाम का जाप करना चाहिये। नये साधक को अपनी सुविधा के अनुसार नाम-जाप की संख्या नियत करनी चाहिये। कालान्तर में १०-१२ हज़ार तक व उससे अधिक संख्या बढ़ा लेनी चाहिये। जाप चलते फिरते, बैठे हुये अथवा काम-काज करते हुये भी किया जा सकता है अर्थात् **''मुख में राम हाथ से काम।''**

पाठ

साधकों को अमृतवाणी का नित्य पाठ करना चाहिये। नित्य पाठ से संकट तथा विपदाओं का निवारण होता है तथा शुभ-मंगल का संचार होता है। ''स्थितप्रज्ञ के लक्षण'' व ''भक्ति व भक्त के लक्षण'' का नित्य पाठ करने से लाभ प्राप्त होता है।

स्वाध्याय

गीता, रामायण आदि सद्ग्रन्थों का भावना से स्वाध्याय करते रहना चाहिये। स्वाध्याय से अपने साधन की जानकारी प्राप्त होती है। साधन करने में रूचि बढ़ती है। स्वाध्याय व मनन के लिये दिनचर्या में कम से कम १० मिनट का समय तो अवश्य नियत करना चाहिये।

अनन्य-भाव

साधक को श्री राम के प्रति एवं अपने गुरुजनों व उनके पथ के प्रति अटूट श्रद्धा व विश्वास होना चाहिये, साथ ही समर्पण का भाव होना भी आवश्यक है। साधक को एक इष्ट, एक गुरु, एक ग्रन्थ, एक पथ, एक विधि तथा एक साधन पर दृढ़ रहना चाहिये।

सत्संग

नये साधक को स्थानीय साप्ताहिक, दैनिक व विशेष सत्संगों में यथा सम्भव सम्मिलित होते रहना चाहिये, जिससे वह साधन से जुड़ा रहे। इन सत्संगों से ही नवीन प्रेरणा तथा उत्साह प्राप्त होता है, श्रद्धा व विश्वास बढ़ता है, मन की शान्ति प्राप्त होती है एवं तनाव दूर होता है।

सहज मार्ग

श्री स्वामी जी महाराज की "राम-नाम" की उपासना बड़ी सुखद, सुलभ, सुगम और अधिक फलदायक है। इसमें घर-परिवार व काम-धन्धों का त्याग नहीं किया जाता है। गृहस्थ-जीवन में रहकर सभी कर्त्तव्य-कर्म करते हुये साधना की जाती है।

राम-कृपा

हमें बड़े ही भाग्य से दुर्लभ मानव-जन्म मिला है। जब सौभाग्य का सूर्य उदय होता है तभी राम-कृपा होती है और सत्संग मिलता है, तब सच्चे सन्त का मिलाप होता है और वे करुणा करके हमारे कल्याण के लिये भक्ति-योग प्रदान करते हैं। यह सब " श्री राम-कृपा" का सुफल ही मानना चाहिये।

दिल्ली श्री रामशरणम् में होने वाले विभिन्न कार्यक्रम

१. दैनिक सत्संग	प्रातः ७ से ८ बजे तक
२. रविवार का सत्संग	गर्मियों में (अप्रैल से अक्तूबर)
	प्रातः ६ से १०.३० बजे तक
	सर्दियों में (नवम्बर से मार्च)
	प्रातः ६.३० से ११ बजे तक
३. मंगलवार का जाप	राम नाम का अखण्ड जाप
	प्रातः ७.४० से सायं ७ बजे तक
४. हर पूर्णिमा का जाप	राम नाम का अखण्ड जाप
(गुरुपूर्णिमा व चैत्र पूर्णिमा)	प्रातः ७.४० से अगले दिन प्रातः ७ बजे।
यदि अगले दिन रविवार	जाप की पूर्ति प्रातः ६ बजे
५. १३ तारीख का जाप	राम नाम का अखण्ड जाप
आरम्भ	प्रातः ७.४०
पूर्ति	अगले दिन प्रातः ७ से ८ बजे
	श्री रामायण जी के पाठ के साथ
यदि अगले दिन रविवार	सत्संग से एक घण्टा पहले
	श्री रामायण जी के पाठ के साथ
६. २६ तारीख का जाप	राम नाम का अखण्ड जाप
आरम्भ	प्रातः ७.४०
पूर्ति	सायं ६ से ७ बजे
	श्री रामायण जी के पाठ के साथ
७. २ अक्तूबर	श्री प्रेम जी महाराज के जन्मदिवस के
	उपलक्ष्य में श्री रामायण जी का पाठ

आरम्भ	प्रातः ७.०० बजे
पूर्ति	३ तारीख को प्रातः ८ बजे भजन कीर्तन
८. नव वर्ष	३१ दिसम्बर को श्रीरामायणजी का पाठ
आरम्भ	प्रातः ७.०० बजे
पूर्ति	१ तारीख को प्रातः ८ बजे भजन कीर्तन

९. पुष्पांजलि ५ विशेष दिनों पर गुरुजनों के चरणों में पुष्पांजलि अर्पित की जाती है। १) चैत्र पूर्णिमा २) गुरु पूर्णिमा ३) २६ जुलाई ४) २ अक्तूबर ५) १३ नवम्बर

स्वामी जी महाराज द्वारा रचित ग्रन्थों की सूची

१. भक्ति प्रकाश
२. वाल्मीकीय रामायणसार
३. श्रीमद्भगवद्गीता
४. एकादशोपनिषद् संग्रह
५. प्रवचन पीयूष
६. प्रार्थना और उसका प्रभाव
७. उपासक का आन्तरिक जीवन
८. भक्ति और भक्त के लक्षण
९. स्थितप्रज्ञ के लक्षण
१०. भजन एवं ध्वनि संग्रह
११. अमृतवाणी
१२. अमृतवाणी व्याख्या (हिन्दी,अंग्रेज़ी)
(कन्नड,मलयालम,तेलुगू,तामिल)
१३. सुन्दरकाण्ड

'श्रीरामशरणम्'

८ ए, रिंग रोड, लाजपत नगर–४, नई दिल्ली–११००२४

web.site : www.shreeramsharnam.org

E-mail address: shreeramsharnam@hotmail.com